



SHRI MUNNA MASTER

Shri Munna Master is a popular Bhajan Singer in the area of Bagru (Jaipur), best known for his performances in the devotional music. He is popularly known as the Baiju Bawra of Bagru.

2. Born on 15th May, 1958, Shri Munna Master belonged to an ordinary Muslim family. He got his elementary education from Government Sanskrit School Bagru. He attained basic training for music and instruments from his father in his childhood. He completed his matric education (Praveshika) in Sanskrit in 1975. He earned a certificate in Sanskrit known as Prak Shastri in 1976 from Government Sanskrit College, Mahapura. He completed the degree of Sangeet Visharad from Swai Mansingh Sangeet Vidhyalaya, Jaipur in 1993. After finishing his education, he used to teach in various private schools. At the same time, he was engaged in writing devotional songs. He has been a prominent singer in the Jugal Maharaj Temple Fair.

3. Besides singing devotional songs, Shri Munna Master has been serving cows regularly in the Ramdev Gaushala for the last fifteen years. His father, who was a significant personality in the field of music and literature, inspired him for the service towards cows and philanthropy. He joined Shri Ramdev Gaushala Bagru in 2005. He is known as an ultimate devotee of cows. He sings devotional songs in the Gaushala. He has a good command over Rajasthani, Hindi and Sanskrit. He sings Bhajans in these three languages with equal efficiency. Some of his popular Bhajans include 'Khatu me hota to chala aata', 'Jeevan gau seva bin soona', 'Anand ho rahe hai Shri Ram ki kripa se'. His morning starts with cow service and his evening completes with devotional songs.

4. Shri Munna Master is also a competent writer. A book written by him named, Shri Shyam Surbhi Vandana, was published in 2016. This composition is a collection of devotional songs dedicated to cows, Lord Krishna, Lord Ram and some other deities. He is considered as an epitome of communal harmony. He is highly esteemed and loved by People of all communities. He is a symbol of love and art in Bagru. He has a passion for Sanskrit. He considers and respects Sanskrit and the cow like his mother. He himself studied Sanskrit. He inspired his four sons to study Sanskrit.

5. Shri Munna Master is the recipient of numerous awards and honuours. He has been awarded many times by the municipality of the town of Bagru and the committee of Jugal Darbar Fair. He has been giving his service as a cultural in-charge in the Padyatra (religious walk) managed by Shri Shyam Seva Satsang Mandal and Shri Kalyan Seva Satsang Mandal. For his remarkable service to society and his extraordinary musical performance, he was awarded in the fair of Dussehra held by Yuva Gaurav Mandal. He was also awarded by the Vyapar Mandal of Bagru.





श्री मुन्ना मास्टर

श्री मुन्ना मास्टर बागरु (जयपुर) क्षेत्र के लोकप्रिय भजन गायक हैं जिन्हें भक्ति संगीत के क्षेत्र में अपनी भजन गायकी के लिए जाना जाता है। वह लोगों के बीच बागरु के बैजू बावरा नाम से मशहूर हैं।

2. श्री मुन्ना मास्टर का जन्म 15 मई, 1958 को एक साधारण मुस्लिम परिवार में हुआ। उन्होंने अपनी प्राथमिक शिक्षा बागरु के सरकारी संस्कृत विद्यालय से प्राप्त की। उन्होंने बचपन में ही अपने पिता से संगीत और वाद्ययंत्रों की प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त कर ली थी। उन्होंने 1975 में संस्कृत में मैट्रिक शिक्षा (प्रवेशिका) पूरी की। उन्होंने 1976 में सरकारी संस्कृत महाविद्यालय, महापुरा से संस्कृत में 'प्राक् शास्त्री' का प्रमाणपत्र प्राप्त किया। उन्होंने 1993 में सवाई मानसिंह संगीत विद्यालय, जयपुर से संगीत विशारद की उपाधि प्राप्त की। शिक्षा पूरी करने के पश्चात्, उन्होंने अनेक निजी विद्यालयों में संगीत अध्यापन का कार्य किया। उसी दौरान वे भजन लिखने लगे। वह जुगल महाराज मंदिर मेले के प्रख्यात गायक रहे हैं।

3. भजन गाने के अलावा, श्री मुन्ना मास्टर पिछले पंद्रह वर्षों से नियमित रूप से रामदेव गौशाला में गौ सेवा कर रहे हैं। इनके पिता संगीत और साहित्य के क्षेत्र के नामी व्यक्ति थे। उनके पिता ने उनको गौ सेवा और परोपकार के प्रति प्रेरित किया। वह 2005 में बागरु की श्रीरामदेव गौशाला से जुड़े। इन्हें परम गौ सेवक के रूप में जाने जाते है। वह गौशाला में भजन गाते हैं। उन्हें राजस्थानी, हिंदी और संस्कृत भाषा का यथेष्ठ ज्ञान है। वह इन तीनों भाषाओं में समान निपुणता से भजन गाते हैं। उनके कुछ लोकप्रिय भजनों में,'खाटू में होता तो चला आता','जीवन गऊ सेवा बिन सूना','आनंद हो रहे हैं श्रीराम की कृपा से' शामिल हैं। इनकी सुबह की शुरुआत गौ सेवा से होती है और शाम भजनों से होती है।

4. श्री मुन्ना मास्टर एक सुयोग्य लेखक भी हैं। उन्होंने 'श्रीश्याम सुरभि वंदना' नामक पुस्तक लिखी है जो 2016 में प्रकाशित हुई। यह गाय, भगवान श्रीकृष्ण, भगवान श्रीराम और कुछ अन्य देवी–देवताओं को समर्पित भक्ति गीतों का संकलन है। उनको सांप्रदायिक सद्भाव का प्रतीक माना जाता है। सभी संप्रदाय के लोग उनका अत्यंत सम्मान और उनसे स्नेह करते हैं। वह बागरु में प्रेम और कला की पहचान हैं। उनका संस्कृत के प्रति बहुत लगाव है। वह संस्कृत और गाय के प्रति मातृवत् श्रृद्धा रखते हैं। उन्होंने स्वयं संस्कृत का अध्ययन किया है। वह अपने चारों पुत्रों को भी संस्कृत का अध्ययन करने के लिए प्रेरित करते हैं।

5. श्री मुन्ना मास्टर को बहुत से पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। उन्हें अनेक बार बागरु शहर की नगर पालिका और जुगल दरबार मेला समिति द्वारा सम्मानित किया गया है। उन्होंने श्रीश्याम सेवा सत्संग मंडल और श्रीकल्याण सेवा सत्संग मंडल द्वारा संचालित पदयात्राओं में सांस्कृतिक प्रभारी के रूप में अपनी सेवा प्रदान की हैं। समाज के प्रति उनकी उल्लेखनीय सेवा और उत्कृष्ट संगीत प्रस्तुति के लिए उन्हें युवा गौरव मंडल द्वारा आयोजित दशहरा मेला में पुरस्कार प्रदान किया गया था। इन्हें बागरु व्यापार मंडल द्वारा भी सम्मानित किया गया था।